What is Arya Samaj?

Arya Samaj, founded by Maharshi Dayanand Saraswati, is an institution based on the Vedas for the welfare of universe. It propagates universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 37	7/2015-16	MONTHLY	January 2015

We wish all our readers A Very Happy New Year 2015

- Celebration of Indian Republic Day.
  At Arya Samaj Bhavan
  On Sunday 1st February 2015
  From 11am to 1.30pm
  (Please see page 18 for detailed information)

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)
188 INKERMAN STREET (|OFF ERSKINE STREET)
NECHELLS, BIRMINGHAM B7 4SA
TEL: 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

O Lord! Thou art Great **Krishan Chopra** **3**

सँस्कार-भाग ९ **आचार्य डॉ. उमेश यादव** **5**

अध्यात्म के शिखर पर-१६ **आचार्य डॉ. उमेश यादव** **11**

Hall Hire Advert **14**

Cost for our services **15**

Matrimonial Advert **16**

Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial) **17**

Indian Republic Day Celebration **18**

News (पारिवारिक समाचार) **19**

For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm. Bank Holidays - Closed
Tel. 0121 359 7727

O Lord! Thou art Great

By Krishan Chopra

आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्बधे रोचना दिवि ।
न त्वावां इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यतेऽति विश्वं ववक्षिथ ॥ ऋग्वेद १.८१.५

Aa pa prou paarthivam rajo badbadhe rochana divi l
na tvaavaam indra kashchana na jaato na janishyate ati vishvam vavakshitha ll

Rig 1.81.5

Meaning in Text Order

aa paprou = filled, paarthivam = earthly, rajah = region, badbadhe = places, rocana = bright planets, divi = in heaven, na = not, tvavan = like you, Indarah = Lord,kascana = any one, na = bneither, jatah = born, na = nor, janasiyate = born ati = fills , visvam = universe, vivakshitha = sustained.

Meaning

God pervades the earth and regulates all the planets in the planetary region. No one is born like God in the world and will never born. He is sustaining the entire universe.

<u>Contemplation</u>

Human beings cannot comprehend the creation of God completely. The earth is full of magical invaluable things. The soil, water, air and fire look like small things but they are so valuable that we cannot survive without them. Look at His creation of snowy mountains on earth. They provide us with wonderful scenery to sing the songs of praises for the creator of the world and in summer when the snow melts, it provides water to rivers. This water becomes the source of life for drinking and irrigation so that we can water our crops. We witness the flowers, full of fragrance, multiple variety of colours and different types which give pleasure to our eyes, but also give please our minds as well..

Trees are laden with fruits in different seasons and have different tastes. The varieties of fruits provide us with nutrition to nurture our bodies. He has created the herbs which are the life- givers for our health and many types of grain for our food. You have created many tastes in various fruits and vegetables. It is due to Him that rivers are flowing and water from falls flow from the mountains, in the bosom of the earth you have gifted us with gold, silver and iron, coal and salt minerals and pearls in the shells in the ocean. How can we forget your wonderful creation? These are the signs which remind us of your creative nature and how can we forget your greatness?

You have created the sun and moon and the solar system in the upper region. It is your power which has sustained all the planetary system in the universe which spread light for us. O supreme architect! No one is like you in this world and no one will ever be like you. Those who create your images are misguided. Truly, you bear many names and wise people call you by diffent names. You are the creator - **Brahma**, and great protector like you.sustainer**- Vishnu** and dissolver**- Shiva** of the universe. No one is the creator.

सँस्कार-भाग ९

आचार्य डॉ. उमेश यादव

सीमन्तोन्नयन-तीसरा सीमन्तोन्नयन सँस्कार है । यह सँस्कार गर्भ के चौथे, छठे या आठवें मास में किया जाता है । सीमन्त+उन्नयन= सीमन्तोन्नयन । सीमन्त का एक अर्थ इस प्रकार है जो अष्ठाध्यायी के एक सूत्र में कहा - "सीमन्त: केशेषु" अर्थात् केशों को विभक्त करने वाली मध्य रेखा सीमन्त कहलाती है । सम्भवत: यही कारण है कि इस सँस्कार में पति द्वारा कंघा से पत्नी के केशों को ऊपर उठाकर जुड़ा बांधने का विधान है । ऊपर उठाना ही उन्नयन हुआ । सीमन्त का दूसरा अर्थ "मस्तिष्क" भी है । सुश्रुत (शारीर स्थान-६) के अनुसार खोपड़ी (शिर) पाँच भागों में बँटा हुआ है । उसकी सँधियों (जोड़ों) को भी सीमन्त कहते हैं । खोपड़ी भी मस्तिष्क के अर्थ में सामान्यत: लिया जाता है जो पाँच सीमन्तों में विभक्त सिद्ध हुआ । मूलत: मस्तिष्क के पूर्ण विकास हेतु यह सँस्कार किया जाता है । सीमन्तोन्नयन सँस्कार का आन्तरिक पक्ष में यह अर्थ सर्वथा सार्थक है । सीमन्तोन्नयन सँस्कार को करने का समय गर्भ-स्थिति के चौथे, छठे या आठवें मास में है । वस्तुत: गर्भ में पलने वाली संतान का मस्तिष्क चौथे मास में बनना शुरु हो जाता है । इसी तरह पाँचवें में मन, छठे में वुद्धि, सातवें में अँग-प्रत्यँग का विकास और आठवाँ मास बड़ी सावधानी का है क्योंकि इस मास में "ओज" अस्थिर होता है । सुश्रुत में ही यह भी कहा गया है- " अष्ठमे मासे जातस्य हरन्त्योजो निशाचरा: " अर्थात् आठवें मास में जन्म होने पर ओज का हरण होता है

फलत: जन्म लेनी वाली संतान प्राय: मर जाती है । यही कारण है कि सबके लिये चौथे से आठवें मास तक अधिक सावधानी तथा संयम की जरूरत है । मस्तिष्क एवं मस्तिष्क से जुड़े मन, वुद्धि, चित्त आदि के समुचित विकास हेतु ही यह सँस्कार करने का प्रयोजन है ।

जैसा कि विचार किया कि छठे-सातवें मास में वुद्धि व सब अँगों का विकास होता है वैसे ही आठवें मास में यद्यपि ओज अस्थिर होता है पर गर्भिणी स्त्री के अन्दर दो हृदय बन जाते हैं; एक उसके स्वयं का और दूसरा उसकी होने वाली संतान का । अत: वह स्त्री दौहृदया या दौहृदिनी कहलाती है । जानने की बात है कि बच्चे का हृदय और माता का हृदय दोनों रस वाहक धमनियों से जुड़े होते हैं । फलत: माता की ईच्छा ही गर्भस्थ बच्चे की ईच्छा बनती होती है । इस तरह माता का मन, विचार, संस्कार, आहार-विहार आदि सब आचरण बच्चे के मन, वुद्धि, विचार संस्कार, हृदय और यहाँ तक कि सब अँग-प्रत्यँग पर गहरा प्रभाव डालते हैं । इसी कारण यह सँस्कार गर्भ-स्थिति के चौथे, छठे या आठवें मास में करना निर्देशित है । इसकी पूरी वैज्ञानिकता को समझने के लिये हमें इसकी एक-एक विधि को जानना होगा । आगे आने वाली कड़ी में हम इन्हें विस्तार से जानेंगे । १. शुक्ल पक्ष में सँस्कार हो-शुक्ल पक्ष चन्द्रमा प्रधान पक्ष है । “चन्द्रमा मनसो जात...” ऋग्वेदीय पुरुष सूक्त- मन का सम्बन्ध चन्द्रमा से माना जाता है । चन्द्र तुल्य मन शीतल, प्रकाशित और स्थिर हो । मन का सीधा सम्बन्ध वुद्धि और हृदय से भी है । हमारी संकल्प शक्ति को बढ़ाने और बनाये रखने में मन-वुद्धि-हृदय का महत्त्वपूर्ण योगदान है । इन्हीं कारणों से यह सँस्कार शुक्ल पक्ष के मूल आदि पुरुष नक्षत्रों से युक्त काल

में किया जाना लिखा है । उल्लेखनीय है कि जातकर्म सँस्कार और अन्त्येष्टि सँस्कार को छोड़कर सभी सँस्कारों को प्राय: शुक्ल पक्ष में ही करने का निर्देश है । मूल भाव यही है कि बच्चे को भरपूर विकास व निर्माण में शुक्ल पक्ष निश्चित रुप से ज्ञान, प्रकाश, विकास व पूर्णता का प्रेरक है । हम अपनी संतान से इन्हीं गुणों की अपेक्षा रखते हैं । चन्द्रमा जब पुरुष नक्षत्रों से युक्त होता है तब ऋतु प्राय: संतुलित होती है । इसका भाव यह है कि आने वाली संतान में समता-विषमता का संतुलन बने और वह जीवन में हर ऊँची-नीची अवस्थाओं का सामना कर संसार में सफलता पाये ।

२. पति द्वारा केशों का जुड़ा बाँधना-यहाँ प्रथम संकेत तो यह है कि पत्नी/स्त्री केशों वाली हो । केशों वाली स्त्री सौन्दर्यशालिनी होती है । वेदों में भी कहा-" तमुग्रव: केशिनी: सं हि रेभिरे"-ऋग्वेद-१.१४०.१८, केश दृँहिणी: .... केशवर्धनीम्" -ऋग्वेद-६.२१.३ अर्थात् स्त्रियाँ केशों वाली होकर सौदर्यशालिनी बनें । केश होगा तभी तो जुड़ा बन्धेगा । जुड़ा सृँगार के लिये स्त्रियांँ अवश्य बाँधती हैं पर यहाँ यह केवल सृँगार ही उद्देश्य नहीं है अपितु मन-वृत्तियों को नियन्त्रण में लेना है । पत्नी अपनी मन-वृत्तियों को समेट कर सौंदर्य के साथ पति के ही प्रति पूर्ण प्यार समर्पित करने का व्रत लेती है । पति के मन की प्रसन्नता को समझती है और प्यार का पूर्ण समर्पण उढ़ेल देती है । इसी कारण यहाँ पत्नी के केशों का जुड़ा पति द्वारा बाँधने का विधान है । इस विधि द्वारा पति जरूरत पड़ने पर पत्नी की सेवा की जिम्मेवारी भी लेता है । गर्भस्थ संतान की पूरी रक्षा व उसके पूर्ण विकास के क्रम में सहयोग के लिये पत्नी के लिये पति से नजदीक और कोई नहीं हो सकता जो अपनी संतान के सुख हेतु उसके अत्यन्त निकट

अनुभव करता हो । ऐसी अवस्था में पति ही पत्नी व संतान के लिये सम्मान, सेवा, सहयोग, प्रेम व दायित्व लेने में सक्षम हो सकता है । पति तुल्य प्यार, सेवा व समर्पण बाहर का कोई सृँगार-विशेषज्ञ (हेयर-ड्रेसर) या घर की ही कोई अन्य दक्ष स्त्री या पुरुष भी सेवा भाव में इतना समर्पण व निकटता की अनुभूति नहीं दे सकता । अब रही केशों में सुगन्धित तेल डालकर जुड़ा बाँधना सो यह है कि पति जब पत्नी के केशों में सुगन्धित तेल डालकर कंघा से बालों को ऊपर करता है तो यह आने वाली संतान के मस्तिष्क-उन्नयन भाव को दर्शाना है । ऐसा करने से खोपड़ी का तन्तु-तन्तु प्रभावित होता है जिससे पत्नी के मन में जो प्रसन्नता आती है वह गर्भस्थ संतान के मन-मस्तिष्क को भी प्रभावित करता है । तेल की भीनी-भीनी सुगन्ध स्त्री के मन को प्रसन्नता देती है । जैसा कि पूर्व कह आये हैं कि खोपड़ी के अन्दर ही मस्तिष्क व वुद्धि का विकास हो रहा है, इस कारण इस विधि से केवल मानसिक व वौद्धिक प्रसन्नता ही नहीं वल्कि उन्का समुचित विकास की भावनाओं को लेकर पत्नी के लिये एक पति और संतान के लिये एक पिता उनकी रक्षा व सेवा की पूरी जिम्मेवारी ले रहा है । पति द्वारा जुड़ा बाँधने क एक अर्थ यह भी है पत्नी महसुस करे कि आने वाली संतान की नींव मानो पक्की हो गयी है । हर वार आने वाली संतान की स्थिति में यही भाव दुहराया जायेगा पर आन्तरिक रुप से पत्नी (माँ) को ही संतान के संतुलन के लिये हमेशा तैयार रहना होगा । यहाँ गुलर वा अर्जुन वृक्ष की शलाका अथवा शाही के काँटों से जुड़ा निकालने के लिये कहा । इनसे बना कँघा या इनसे मिलते-जुलते गुण-धर्म के बने कँघा का प्रयोग सम्भावित है । वस्तुत: गुलर एक फलदार वृक्ष है । अर्जुन वृक्ष हृदय-रोग निवारक है । शाही के काँटों में मजबूती और शुद्धता मानी जाती है । इस प्रकार बालक या बालिका जीवन में सदा फले-फुले,

हृदयशाली अर्थात् मजबूत, निरोग व शुद्ध हृदय से युक्त हो ।
३. जुड़ा संवारते हुये निकटतम नदी का नाम लेना- “ सोम एव नो राजेमा मानुषी: प्रजा :.........असौ ” प्रस्तुत मंत्र का उच्चारण कर मंत्रगत् “असौ” पद की जगह किसी प्रवाहित नदी का नाम लें । तात्पर्य यह है कि बच्चे का मन चन्द्रमा की तरह शाँत एवं नदी की तरह मर्यादित व प्रवाहित हो । जीवन में कितनी ही आशा-निराशा आती है । जैसे चाँद पूर्णिमा में प्रकाशपूर्ण एवं अमावश्या में अन्धेराभरा होता है, नदी बरसात में जलमग्न और गर्मी में सुखी होती है, पर हर हाल में चाँद या प्रवाहित नदियाँ संतुलन बनाकर रखती हैं वैसे ही होने वाली संतान भी जीवन के हर हाल में संतुलित रहे ।
४. घृत में मुख देखना- हवन में प्रयुक्त घी से जो भाप बनता है, वह नश्वार/नासिका द्वार से गर्भिणी के भीतर जाकर गर्भस्थ संतान के मस्तिष्क को पुष्ट करता है । वस्तुत: स्त्री सदा समाज में सुन्दरता का प्रतीक मानी जाती है । घी में अपना सुन्दर मुखड़ा ही देखती है और इससे भी सुन्दर अपनी संतान चाहती है । तभी स्वयं का मुख घी में देख पति द्वारा पूछे जाने पर कि “किं पश्यसि ? ” , उत्तर देती है कि “ प्रजां पश्यामि” = मैं अपनी सुन्दर संतान देखती हूँ और आगे भी कहती है-“ पशून्पश्यामि, सौभाग्यं पश्यामि, पत्यु: दीर्घायु: पश्यामि ” घर में गाय आदि पशु, सौभाग्य और अपने प्रिय पति के दीर्घ आयु भी देखती हूँ । गर्भिणी जहाँ बच्चे की माँ बन रही है, वहीं गृह-देवी भी है अत: पशु आदि धन से दूध-घृत आदि सुखों को चाहती है । वह घर की शोभा है तो सौभाग्य चाहती है और पति की धर्म पत्नी है तो अपने पति/गृह स्वामी की लम्बी आयु चाहती है । इन्हीं चाहतों और प्राप्तिओं के साथ घर में एक

देवी पत्नी, माँ या किसी भी रुप में सदैव घर की पूजा का रुप होती है । इसी कारण वैदिक परिवार में गृह पत्नी धर्म पत्नी मानी जाती है ; सदा पूजनीय व मान्य होती है ।

५. खिचड़ी की आहुति देना- यहाँ खिचड़ी की आहुति भी औषधि के रुप में प्रयुक्त होती है । खिचड़ी मूँग और चावल की बनती है । इस खिचड़ी को पिघले गो घृत में डालकर इसकी आहुति देना लिखा है । उक्त अन्न सुपाच्य होता है जो गर्भिणी स्त्री के लिये पूर्णतया अनुकूल है । मूँग तथा चावल तीव्र पीघले गो घृत में डूबकर चमकने लगते हैं । अर्थात् होने वाली संतान सदा चमकती रहे; सुन्दर रहे । यह पकी हुयी खिचड़ी घृत में मिलकर और पुष्ट हो जाती है जो गर्भिणी स्त्री के लिये थोड़ी भी काफी शक्तिदायक हो जाती है । आहुति में पड़ी खिचड़ी का भाप गर्भिणी स्त्री के भीतर जाकर संतान के मस्तिष्क, वुद्धि, मन तथा हृदय के विकास में सहायक होता है । शेष खिचड़ी को स्त्री बाद में अपनी रुची अनुसार थोड़ा-थोड़ा करके खा लेती है । इससे उसे गर्भस्थ शिशु के पोषण में मदद मिलती है ।

६. आशीर्वाद-“ वीरसूस्त्वं भव , जीवसूस्त्वं भव, जीवपत्नी त्वं भव ” यह गोभिल्य गृह्यसूत्र से लिया गया है । विद्वान् पुरोहित तथा सब उपस्थित स्त्री-पुरुष भद्र जन द्वारा यही आशीर्वाद दिया जा रहा है कि वह स्त्री वीर संतान को जन्म दे, जीवित संतान दे और इस तरह आगे भी संतान देने वाली बनी रहे ।

इस प्रकार इन सारी वैदिक मान्यताओं से मण्डित यह सँस्कार सम्पन्न करवाया जाता है जो श्रेष्ठ संतानों के लिये अत्यन्त उपयोगी है । इसके लिये हमें विद्वान् आचार्य कर्मकाण्ड प्रवीण पुरोहित से सम्पर्क करना उचित है ।

अध्यात्म के शिखर पर-१६

आचार्य डॉ. उमेश यादव

ईश्वर एक है; जो सर्वत्र है जो कभी अवतार नहीं लेता, उसे संसार को चलाने हेतु अवतार लेने की जरूरत नहीं पड़ती । तब गीता में श्री कृष्ण जी ने ऐसा क्यों कहा कि जब-जब धर्म की हानि होती है तब-तब मैं शरीर धारण करता हूँ । यथा-

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। भ.गी. ४/७

महर्षि दयानन्द इसका निराकरण इस प्रकार करते हैं- " यह बात वेदविरूद्ध होने से प्रमाण नहीं और (पर) ऐसा हो सकता है कि श्री कृष्ण धर्मात्मा और धर्म (दोनों) की रक्षा करना चाहते थे कि मैं युग-युग में जन्म लेके श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूँ तो कुछ दोष नहीं । क्योंकि " परोपकाराय सतां विभूतय:" परोपकार के लिये सत्पुरुषों का तन-मन-धन होता है तथापि इससे श्री कृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते ।"

इस प्रकार महर्षि दयानन्द श्री कृष्ण को एक सज्जन महात्मा श्रेष्ठ पुरुष ही मानते हैं । यहाँ महर्षि के विचार से स्पष्ट हो रहा है कि धर्म की रक्षा, राष्ट्र-सेवा व परोपकारादि सद्विचारों व कर्मों को बढ़ाने हेतु कोई भी धर्म-प्रेमी, राष्ट्र-भक्त व महात्मा बार-बार जन्म लेने की ईक्षा व्यक्त कर सकता है । ऐसी अभिव्यक्ति से कोई भी

मनुष्य ईश्वर नहीं बन जाता ।
अत: यह स्पष्ट ही है कि वेद-ज्ञान के अभाव से, सम्प्रदायी बातों के जाल में फँसने से और स्वयं भी अज्ञानी होने से मनुष्य ऐसी-ऐसी अप्रामाणिक बातें मानते हैं और तदनुरुप वेद-विरुद्ध कार्य करते हैं । अत्याचारी कंस और दुष्ट रावण को मारने हेतु कृष्ण व राम को ईश्वर-अवतार लेने की जरूरत नहीं । इसके लिये कुशल योद्धा होने की जरूरत है सो श्री कृष्ण और पुरुषोत्तम राम अपने समय के ऐसे ही योद्धा थे । प्रथम तो जो जन्म लेता है; वह अवश्य ही मरता भी है । कंस को कृष्ण ने और रावण को राम ने मारा पर यह भी सच है कि श्री कृष्ण और श्री राम भी मरे । श्री राम जल में डुबने से और श्री कृष्ण जी व्याधा द्वारा उनके पैर में तीर मारे जाने के कारण दिवंगत हुये थे । मरने वाला कभी ईश्वर नहीं हो सकता क्योंकि वेदों में ईश्वर को अजन्मा और अमर कहा गया है । आर्य समाज के दूसरे नियम में भी महर्षि दयानन्द ने ऐसा ही कहा है । हाँ, ईश्वर सदैव और सर्वत्र सब में रहता है । पापियों को दु:ख और पुण्यात्माओं को सुख देना ही परमेश्वर का कार्य है । सर्वत्र व्यापक और सर्वज्ञ होने के नाते ईश्वर सदैव सबके बारे में सब प्रकार की घटित बातों को अच्छी तरह जानता है । अत: सबके लिये विना पक्षपात किये ही सत्य न्याय करने में उसे जरा भी मुश्किल या देर नहीं होती । इस कारण ईश्वर को अवतारी कहना उचित नहीं ।
जो भक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, वे सदा सुखी रहते हैं । ईश्वर की न्याय-व्यवस्था भक्त हो या अभक्त सबके लिये है । जो

सत्य करता है, वह निश्चय ही सुख पाता है क्योंकि सत्य कर्म का फल सुख ही होता है पर जो असत्य करता है; उसका फल दु:ख होने से ईश्वर उसको दु:ख देते हैं ।

यह भी विचारणीय है कि ईश्वर जब विना जन्म लिये सृष्टि को उत्पन्न कर उसे सम्यक्चला सकता है और जरूरत के अनुसार उसका संहार भी कर सकता है तो भला कंस-रावण आदि तुच्छ लोगों को मारने हेतु उसे जन्म लेने की क्या जरूरत हो सकती है? अर्थात् कतई नहीं । हाँ, ईश्वर कृष्ण और राम जैसे कुशल योद्धाओं द्वारा दुष्टों का संहार की अवस्था कर्म-फल के आधार पर अवश्य बना सकता है; सो हुआ । हमें यह मानकर ही चलना होगा कि ईश्वर के सदृश या उससे बड़ा न कोई है और न ही कोई होगा । जैसे अनन्त आकाश कभी मुट्ठी में बन्द नहीं हो सकता, इसी प्रकार सर्वव्यापक ईश्वर कोई मनुष्य रुप नहीं धारण कर सकता । वह तो सदा सर्वदा सर्वत्र व्यापक है । वह कहाँ से आकर किसे के गर्भ में आयेगा या कहाँ से कहीं अन्यत्र जायेगा ? वह तो पहले से ही सब जगह उपस्थित है- “ स पर्य्यगाच्छुक्रम्कायम्” वह पूर्व ही विना शरीर सर्वत्र पहुँचा हुआ है । अत: ईश्वर का जन्म कहना सर्वथा अनुचित है । तब कोई मनुष्य भी ईश्वर नहीं बन सकता । इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि राम, कृष्ण, मोहम्मद, ईशा आदि सब अपने समय के महापुरुष तो कहे जा सकते हैं पर ईश्वर/परमात्मा नहीं ।

Arya Samaj (West Midlands)

Hall Hire

Perfect venue for –

- **Engagements**
- **Religious Ceremonies**
- **Community events**
- **Family parties**
- **Meetings**

Venue information –

- **£300 for 6 hours (min.)**
- **£50 Hourly**
- **Main Hall with Stage**
- **Dining hall**
- **Kitchen**
- **Cleaning**
- **Small meeting room**
- **Vegetarian ONLY**
- **NO Alcohol**
- **Free parking**

For more informatiom call us on
0121 359 7727
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm Bank Holidays - Closed

Cost for our services

- Ordinary membership for Arya Samaj - £20 for 12 months.
- Hire of our hall £300 for 6 hours & there after £50 hourly.
- Matrimonial service - £90 for 12 months.
- Marriage Ceremony performed by our priest - £400.
- Havan performed at home by our priest will be £51.

VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.......

Application form and information can be found on the website
www.arya-samaj.org
Or
Call us on
0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays – Closed

Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)

- Matrimonial service charge - £90 for 12 months

- Please note that Arya Samaj Birmingham and Arya Samaj London are not linked. We both have our **OWN** Matrimonial list and all events are organized **separately.**

- Please note in every issue of Aryan Voice, if anyone that has a * asterisk at the end of there Job, **ONLY** wants to marry in there own caste. Eg

B4745 Hindu Brahmin Boy 26 5 ' 7" Chartered Accountancy*

- All members' records have not been changed yet, as we are still waiting on caste forms, please keep checking this information every issue before you call.

- If you would like to add your caste to your record or state if you only want to marry in caste. Please e-mail or call us, so we can update your record.

- Everymonth in matrimonial list please check whole list, as members that have been deleted, may renew again months later and are being missed, as they take there place on the list depending on ref number order.

- Please inform us when your son or daughter is engaged or married, so we can remove their detail from the list.

Indian Republic Day Celebration
At Arya Samaj Bhavan
188 Inkerman Street
(Off Erskine Street)
Nechells, B7 4SA

On

Sunday 1st February 2015
Havan – 11am – 12pm
Progamme - 12pm – 1.30pm
Rishi Langer – 1.30pm (Vegetarian)

This is a free event, but for caterting purposes, please books your place by calling –

0121 359 7727

News

Congratulations:

On 2nd December 2014 Drs. Arvind & Kanta Sharma were blessed with the birth of their granddaughter. Many congratulations to the new grand parents & family.

Donations to Arya Samaj West Midlands

1.	Mr. Shailesh Joshi	**£151**	Yajmaan on 23.11.2014
2.	Mr. Sanjeev Mahandru	**£170**	Yajmaan in previous month
3.	Mr. Ravinder Arya	**£121**	Yajmaan on 30.11.2014
4.	Mrs. K. Maini	**£101**	Yajmaan on 28.12.2014
5.	Mr. Rajneesh Verma	**£300**	Yajmaan on 07.12.2014
6.	Mr. Baldev K Sood	**£10**	
7.	Dr. Anil Kohli	**£89**	

Thanks to all yajmaans for sponsoring havan in our Arya Samaj Satsang. All above written donations which are for yajmaans are including Rishi-Langar.

Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on 0121 359 7727 for more information on

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**

- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**

- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**

- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**

- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 4th January 2015 & 1st February.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org